थैंक्स्गिविंग सप्ताह

जैया सीबर्ट द्वारा

'मन्दिर में एक दिन' से

गुरुवार, २६ नवम्बर, २०२०

नमस्ते, एशिया।

नमस्ते, अफ़्रीका।

नमस्ते, ओशियानिया।

नमस्ते, उत्तर अमरीका।

नमस्ते, दक्षिण अमरीका।

नमस्ते, यूरोप।

नमस्ते, ॲन्टार्कटिका।

और बहुत ख़ास नमस्ते, भारत को, क्योंकि यह सुन्दर शब्द 'नमस्ते' पूरे विश्व के लिए भारत की ही देन है। 'नमस्ते' जिसका अर्थ है, मेरे अन्दर निहित दिव्यता आपके अन्दर निहित दिव्यता को नमन करती है।

मेरा नाम जैया सीबर्ट है और आप सभी से बात करना मेरे लिए अत्यन्त सम्मान की बात है। आज का हमारा यह उत्सव थैंक्स्गिविंग पर्व के भाव को सटीक रूप में प्रतिबिम्बित कर रहा है। हमने पृथ्वी माता को अपनी कृतज्ञता अर्पित की, जो अनवरत रूप से अपनी प्रचुरता हमें प्रदान करती रहती हैं। एक सिद्धयोग परिवार के रूप में एक-साथ आकर हमने 'मन्दिर में एक दिन' में भाग लिया है जो कि एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन द्वारा निर्मित सीधे वीडिओ प्रसारण द्वारा हो रहा है। सिद्धयोग वैश्विक हॉल में होना वैसा ही अनमोल है जैसे अपने हृदय-मन्दिर में होना।

श्रीगुरुमाई जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, इस ऐतिहासिक दिन के लिए और सिद्धयोग इतिहास में इस अविस्मरणीय क्षण के लिए। मुझे ऐसा लग रहा है कि मन्दिर में सोलह घण्टों के इस दिन के द्वारा आपने हमारे दिल की गहरी, अव्यक्त इच्छा को वास्तविक रूप दिया है।

गुरुमाई जी, मैं यह भी बताना चाहता हूँ कि आपने *मेरे* सपने सच किए हैं। मैंने उन सप्ताहों के बारे में बहुत सुना है जो बाबा जी और आप आयोजित किया करते थे, सन् १९३० के दशक में, ४० के, ५० के, ६०, ७०, ८० और ९० के दशकों में और आरम्भिक २००० में भी। मुझे लग रहा है कि आज इस एक दिवसीय सप्ताह में भाग लेकर आख़िरकार मुझे उन सप्ताहों का उल्लासपूर्ण भाव अनुभव करने का सुअवसर मिला है, जिनके बारे में सभी को ज्ञात है कि कैसे उन सप्ताहों द्वारा लोगों की साधना तेज़ी-से आगे बढ़ी है।

और मेरे अन्दर, पूर्व में हुए एस. वाय. डी. ए. फाउन्डेशन के स्टाफ़ सदस्यों व विज़िटिंग सेवाकर्ताओं के प्रति और भी अधिक सराहना का भाव उदित हुआ है जिन्होंने एक-के-बाद-एक, सप्ताह पर सप्ताह आयोजित किए। अब मैं समझ पा रहा हूँ कि ऐसा करने के लिए कितने प्रयासों की आवश्यकता रही होगी! इसका उल्लेख यहाँ मैं विशेषकर उनके लिए कर रहा हूँ जो सिद्धयोग पथ पर नए हैं, और शायद इस बात से अवगत न हों कि दशकों से सिद्धयोगियों ने अविश्वसनीय रूप में सेवा अर्पित की है ताकि विश्वभर के लोगों के लिए सिद्धयोग की सिखावनियाँ व अभ्यास उपलब्ध हों।

'मन्दिर में एक दिन' इस कार्यक्रम का आरम्भ हुआ, श्रीगुरुगीता के पाठ के साथ।
श्री मुक्तानन्द आश्रम की भूमि पर हल्की-हल्की वर्षा होती रही, थैंक्स्गिविंग के इस दिन पर पृथ्वी के लिए आशीर्वादों की वर्षा हो रही थी। पूरे दिन, जब सिद्धयोग वैश्विक हॉल में आप सभी सिद्धयोग के अभ्यास कर रहे थे, तब मन्दिर का वातावरण जो कि पहले से ही रोमांचपूर्ण था, और भी अधिक दीप्ति से जगमगाता रहा।

आर्या पैक्सटन और शॅल्बी किन्डम, जो इस कार्यक्रम की निदेशक-टीम की सदस्याएँ हैं, उन्होंने सभी को एक ईमेल भेजा था जिसमें उन्होंने कहा था, "इस दिन आप मन्दिर में बिताने के लिए जितना भी समय निकाल पाएँ—कृपया यह जानें कि वह बिलकुल ठीक होगा।" जब मैंने वह पढ़ा और जब मैं मन्दिर में बिताए हमारे इस थैंक्स्गिविंग दिन पर मनन कर रहा था तो मुझे एक दोहा याद आया जिसे गुरुमाई जी ने उद्धृत किया है; यह दोहा भारत के सोलहवीं शताब्दी के सन्तकवि तुलसीदास जी का है।

> तुलसीदास कहते हैं, "महान साधु-सन्तजन की संगति में रहने से, चाहे वह एक घड़ी की संगति हो या आधी घड़ी की, उस संगति में ऐसी सामर्थ्य होती है कि वह हमारे कोटि अपराधों को काट देती है व अशुद्धियों को नष्ट कर देती है।"

कल भारत में विष्णुभक्तों ने एक पर्व मनाया जो उन्हें बहुत प्रिय है, जिसे प्रबोधिनी एकादशी कहते हैं। यह कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष में आती है और यह वह दिन है जब भगवान विष्णु अपनी चार माह की निद्रा से जागते हैं। यह दिन वर्षा ऋतु के समापन को सूचित करता है तथा खेतों में गन्ने की कटाई और विवाह मुहूर्तों के आरम्भ को भी दर्शाता है। विशेषरूप से महाराष्ट्र में रहने वाले विष्णुभक्त, उनका महिमागान करते रहते हैं, करते रहते हैं, और करते रहते हैं।

जब से मैंने सिद्धयोग पथ का अनुसरण करना आरम्भ किया है, मैंने यह सीखा है कि सिद्धयोगी जो भी पर्व मनाते हैं, उसका उद्देश्य है, अपने संकल्प को और भी मज़बूत बनाना, भगवान का महिमागान करना, अन्तर्जात सद्गुणों का विकास करना, तथा और अधिक जागरूकता के साथ सिद्धयोग के अभ्यास करना।

सिद्धयोगियों को यह ज्ञान कहाँ से प्राप्त हुआ? सिद्धयोग के गुरुओं से।

***

कितने ही सिद्धयोगियों ने—श्री मुक्तानन्द आश्रम के स्टाफ़ सदस्यों ने भी और विश्वभर के सिद्धयोगियों ने भी—इस कार्यक्रम में अपने कौशल व प्रतिभाएँ अर्पित की हैं। इन विशेष और अनूठे सहयोगियों में से हर एक को मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ। आपने इस 'मन्दिर में एक दिन' कार्यक्रम को सबसे शानदार बना दिया है।

मैं आप सभी से कुछ कहना चाहता हूँ। मुझे ऐसा लग रहा है कि आज सिद्धयोग वैश्विक हॉल में एक-दूसरे के साथ होकर, सिद्धयोग की सिखावनियों का चिन्तन-मनन कर और एक के बाद एक, सिद्धयोग अभ्यासों में संलग्न होकर हमने साथ मिलकर एक द्वार की रचना की है ताकि अपनी पूजा से हमने जिन आशीर्वादों व सद्-ऊर्जा का निर्माण किया है, वह इस द्वार के माध्यम संसार में प्रवाहित हो सके।

हमारे सामूहिक संकल्प व साधना की कल्याणकारी शक्ति शाश्वत और सकारात्मक परिवर्तन लाती है जिससे इस पृथ्वी के समस्त जीवों का जीवन उन्नत होता है। मुझे लगता है कि पृथ्वी भी हमारे प्रति व हमारे सत्कर्मों के लिए कृतज्ञ है। 'मन्दिर में एक दिन' के दौरान हम सभी ने सीखा है कि वस्तुतः थैंक्स्गिविंग के भोज की तैयारी कैसे करें व इसका आनन्द कैसे उठाएँ।

क्या यह परिपूर्ण नहीं था?

क्या प्रत्येक व्यंजन, इस दिन का प्रत्येक भाग अत्यन्त अद्‌भुत नहीं था? आयुर्वेद के पाकशास्त्र के अनुसार सभी षड्-रस और भावों तथा रसों की अन्य सूक्ष्मताएँ इस पूरे 'मन्दिर में एक दिन' के दौरान सर्वाधिक उचित रूप से छिटकी हुई थीं। हमारी इन्द्रियाँ, हमारे मन, हमारे हृदय और हमारी आत्माएँ तृप्त हैं।

स्वर्ग कैसा होता है?

जो मन गहन मौन में लीन है, उसका एहसास कैसा होता है?

सद्‌गुणों से सिक्त जीवन कैसा प्रतीत होता है?

आकाश में प्रकाश कहाँ से आता है?

आत्मा का प्रकाश अपने तेज को कहाँ प्रसरित करता है?

पूजा-अनुष्ठान इतने महत्त्वपूर्ण क्यों हैं?

संगीत और पावन अक्षरों की ध्वनियाँ, जिन्हें हम गाते हैं, वे हमारे सुप्त भावों को कैसे जाग्रत करती हैं?

कृतज्ञता के अश्रुओं का स्वाद कैसा होता है?

कौन चखता है?

कौन देखता है?

कौन सुनता है?

कौन सूँघता है?

कौन स्पर्श करता है?

आज सिद्धयोग वैश्विक हॉल में, बड़े बाबा के सान्निध्य में और श्रीगुरुमाई की प्रचुर कृपा व आशीर्वादों से हम सभी ने उन 'एक' की अनुभूति की है जो हमारी इन्द्रियों के स्वामी हैं।

आज के इस खुशीभरे थैंक्स्‌गिविंग दिन पर 'आत्मा की प्रशान्ति' प्रखरता से जगमगा उठी है।

मुझे आशा है और मैं प्रार्थना करता हूँ कि आज आपने सिद्धयोग वैश्विक हॉल में होने के लिए जो समय समर्पित किया है उसमें से प्रत्येक क्षण से उपजे लाभ, दसियों गुना बढ़ें, सैकड़ों गुना बढ़ें, हज़ारों गुना बढ़ें।

आपकी कृतज्ञता सदैव बनी रहे—अभी और आगे सदा के लिए भी।

सद्गुरुनाथ महाराज की जय!

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।